कतीलुल अबरा

(कुश्त-ए-गिरया पर अक़ीदत के चन्द आँसू)

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ अब्बास

मुहर्रम के महीने का ग़म से भरा हुआ चाँद असामान पर दिखाई दिया। घर-घर मज़लूमे कर्बला की सफ़े मातम बिछ गई। सदियों के ज़ख़्म जिन्होंने पाक अक़ीदत मुसलमानों के दिलों में घर कर लिया है, ताज़ा हो गए। हर क़ौम अपने मज़हब के मुवाफ़िक़ इसका असर लेती है। कर्बला में बेगुनाह शहीद हो जाने वाला मज़लूम, था भी इस क़ाबिल कि उसका रंज आलम को गिरवीद-ए-तासीर बना ले। कुदरत ने भी इस असर की बक़ा का एहतेमाम किया। दामने उफ़ुक़ को हमेशा के लिए शफ़क़ से ख़ून आलूद बनाकर उस ख़ूने नाहक़ का गवाह बना दिया।

शिया व सुन्नी लोगों को जाने दो, वह तो रसूले पाक[स०] का कलमा पढ़ते और हुसैने[अ०] मज़लूम की मुहब्बत के दावेदार हैं, हिन्दू और पारसी क़ौमें भी इस रंज में हिस्सा लेती और शहीदे कर्बला की मज़लूमियत का तज़किरा करती हैं।

मगर अफ़सोस है कि इस्लाम का दावा करने वाले बाज़ नाम नेहाद लोग इस मुसीबत का असर मिटा देने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाते नज़र आते हैं। ये बात और है कि उनकी इस कोशिश पर पानी फिर जाता है और कुदरत के मुक़ाबले में नाकाम हो जाते हैं।

मज़लूमे कर्बला की ताज़ियादारी पर तरह-तरह के एतेराज़ात किए जाते हैं और अशर-ए-मुहर्रम के ज़माने में मुख़तलिफ़ इश्तेहारात व अख़बारात के ज़रिए से अक़ीदत केश मुसलमानों को इस कारे ख़ैर से रोका जाता है।

ताज़िया को बुत परस्ती कह कर तौहीद के मनाफ़ी बतलाया जाता है और ताज़िये के एहतेराम का नाम शिर्क रखा जाता है। कभी उसको तस्वीर का लक़ब देकर हुरमत का फ़तवा दिया जाता है और कभी बिदअत बताकर उस से सीधे सादे लोगों को मुतनफ़्फ़िर किया जाता है। शिर्क और बुत परस्ती का एतेराज़ हक़ीक़त में नजदी वहाबियों से हासिल किया हुआ एक सबक़ है जो आमोख़्ता के तौर पर बार-बार दुहराया जाता है। जो लोग अस्ल कुब्बा व कुबूर के एहतेराम को बुत परस्ती कहते हैं, उन से इसकी नक़्ल के बारे में कौन सी उम्मीद हो सकती है लेकिन अब हक़ीक़त बेनक़ाब हो चुकी है। वहाबियों की रद में जो-जो किताबें लिखी जा चुकी हैं, उन्होंने इस एतेराज़ को मकड़ी के जाले की तरह उड़ा दिया है। हम ने अपनी किताब ''कश्फ़ुन्नक़ाब अन अक़ाएदि इब्ने अब्दुल वहाब'' में तफ़सील से इस क़ौल की रद कर दी है।

ग़ैर जानदार चीज़ों की तसवीर का जायज़ होना सही बुख़ारी और सही मुस्लिम से साबित है और ज़ाहिर है कि ताज़िया क़ब्रे हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा[अ०] की नक़्ल है जो जानदार नहीं है। बिदअत भी बइत्तेफ़ाक़े उलमाए अहलेसुन्नत वाजिब, मुस्तहब और मकरूह हो सकती है। लाज़िम नहीं है कि हराम ही हो वरना तरावीह की नमाज़ एक नाक़ाबिले तावील गुनाह क़रार पाएगी।

सबसे ज़्यादा मुग़ालते वाली बात ये है कि किसी मैय्यित के ग़म में गिरया करना मना है और हादीसों से इसका नाजायज़ होना साबित है। हम इस वक़्त इसी मौज़ू

पर क़लम उठाना चाहते हैं और बड़े फ़िरक़े के अकाबिर की किताबों से रोने का जवाज़ साबित करते हैं। उम्मीद है कि इन्साफ़ के साथ अहले इस्लाम इस मुख़्तसर तहरीर को देखकर अपने नबी के नवासे पर गिरया व ज़ारी में कोताही न करेंगे।

आम मुसलमानों के नुक़्त-ए-नज़र से सबसे पहले जो चीज़ इस क़ाबिल है कि सरे तसलीम उसके सामने झुक जाए, वह अल्लाह की किताब और रसूल^{स०} का क़ौल, फेल और तक़रीर है। इसके बाद सहाबा केराम की सीरत और ताबईन का तर्ज़े अमल है। इनमें से अगर एक चीज़ मौजूद हो तो मतलब के साबित करने के लिए काफ़ी है। चे जाएकि तमाम दलीलें एक साथ किसी मतलब को साबित करें।

क़ुरआन मजीद से गिरया व ज़ारी का सुबूत

ख़ुदावन्दे आलम जनाब याक़ूब[अ०] की हालत बयान करते हुए फ़रमाता है:

"उनकी आँखें रंजो ग़म से सफ़ेद हो गई थीं।"

(सूर-ए-यूसुफ़)

अल्लामा ज़मख़शरी तफ़सीरे कश्शाफ़ में इस आयत के ज़ेल में लिखते हैं:-

"याक़ूब की आँखें यूसुफ़ की जुदाई में 80 साल तक ख़ुश्क नहीं हुईं, हमेशा आँसुओं से तर रहती थीं हालांकि उनसे बढ़कर उस वक़्त ख़ुदा का मुक़र्रब बन्दा कोई न था।"

और इसी तग़ैय्युर में जनाब रिसालतमआब[स०] से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील से पूछा कि याक़ूब का रंज यूसुफ़ की जुदाई में किस हद पर था? उन्होंने कहा कि सत्तर पिसर मुर्दा औरतों के बराबर। हज़रत ने फ़रमाया कि सवाब उनको किस हद तक मिला। जवाब दिया कि सौ शहीदों के बराबर सवाब अता किया।

इस आयत में बज़मीम-ए-तफ़सीर चन्द बातों का इन्केशाफ़ होता है:-

1- हज़रत याक़ूब[अ०] बावजूद मरतबे के यूसुफ़ की जुदाई में 80 बरस तक दिन रात रोते रहे।

2- क़ुर्आन मजीद में इस फेल का तज़किरा बग़ैर किसी एतेराज़ के दर्ज किया गया है जिस से मालूम होता है कि अल्लाह की नज़र में ये काम तारीफ़ के क़ाबिल था, वरना क़ुरआन जो उम्मते इस्लामिया की तालीम के लिए इन वाक़िआत का तज़किरा करता है, ज़रूर इस पर एतेराज़ करता।

3- उनके गिरया व बुका ने अज्रो सवाब में कोई कमी नहीं कि बल्कि उनके रंजो ग़म के तज़किरे के बाद सवाब का ज़िक्र करना बतलाता है कि ये हुज़्नो ग़म उनका इबादत था।

रसूल[स०] का अमल

ख़ुद जनाब रिसालत मआब[स०] मुसीबत के वक़्त में बेचैन होकर रो दिये हैं और बलन्द आवाज़ से गिरया फ़रमाया है। इस्लामी किताबें इस तरह के वाक़िआत से भरी हुई हैं, हम इस मौक़े पर कुछ हवालों पर इक्तेफ़ा करते हैं।

1- इब्ने अब्दुल बर ने इस्तीआब में लिखा है: *"जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि जब हज़रत रसूल[स०] ने हमज़ा को मक़तूल पाया तो रोने लगे और जब उनके बदन के कटे हुए हिस्सों पर नज़र पड़ी तो चीख़ मार कर रोए।"*

अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई मुहद्दिस ने 'इन्सानुल उयून' में तहरीर किया है:-

इब्ने मसूद से रिवायत है कि हम ने हज़रत रसूल[स०] को कभी इस शिद्दत से रोते नहीं देखा जैसे हज़रत हमज़ा[अ०] पर गिरया फ़रमाया। क़िब्ला रूख़ लाश को रख कर लाश के क़रीब खड़े हुए और एक चीख़ मारी यहाँ तक कि ग़श आ गया और हज़रत यूँ नौहा पढ़ रहे थे:-

"ऐ रसूले ख़ुदा के चचा! ऐ ख़ुदा और रसूल के शेर! ऐ हमज़ा! ऐ नेक बातों के करने वाले! ऐ दीन पर से मुसीबतों के दूर करने वाले! ऐ रसूल[स०] के दुश्मनों को हटाने वाले!"

और अल्लाामा इब्ने अबिल हदीद मोतज़िली ने वाक़िदी से नक़्ल किया है कि:-

हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] की उहद के रोज़ ये हालत थी कि जब सफ़िया (हमज़ा की बहन) *रोती थीं, हज़रत पर गिरया तारी हो जाता था और जब रोते-रोते उनके गले में फंदे पड़ने लगते थे तो हज़रत की भी वही हालत*

हो जाती थी।

क्या इस से बढ़कर बेताबी और गिरया व बुका की हालत हो सकती है? इसके बाद गिरया व बुका को ख़िलाफ़े शरअ बतलाना फेले रसूल पर एतेराज़ की सूरत रखता है जो कुफ्र की हद में दाख़िल है।

दूसरा मौक़ा

हज़रत रसूल[स०] ने अपने बेटे इब्राहीम के एहतेज़ार के वक़्त गिरया फ़रमाया। चुनानचे अल्लामा इब्ने अब्दुल बर मालिकी अपनी किताब 'इस्तीआब' में लिखते हैं:-

अनस से रिवायत है कि मैंने इब्राहीम[अ०] के इन्तेक़ाल के वक़्त देखा कि उस वक़्त हज़रत रसूल[स०] की आँखों से आँसू बह रहे थे और हज़रत फ़रमा रहे थे कि ''आँखें आँसू बहाती हैं और दिल को सदमा पहुँचता है लेकिन हम ऐसी बात नहीं कहते जो ख़ुदा को नाराज़ करे। ऐ इब्राहीम हमको तुम्हारा दिली सदमा है।''

इस हदीस में जिस तरह फेले रसूल[स०] से गिरया व बुका का जवाज़ साबित होता है, ज़बानी इरशाद से भी ज़ाहिर होता है कि जो कुछ भी ख़िलाफ़े शरअ है, वह ऐसे अलफ़ाज़ का ज़बान से जारी करना जो ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो, लेकिन आँखों से आँसुओं का बहाना या मुसीबत का असर लेना किसी तरह नाजाएज़ नहीं हो सकता।

इस रिवायत को हाफ़िज़ इब्ने जौज़ी हंबली ने अपनी किताब 'तलबीस इबलीस' में भी नक़्ल किया है और सही बुख़ारी (जिल्द अव्वल पेज-148) में हज़रत रसूल[स०] की गिरया व ज़ारी के वाक़िए को नक़्ल करके लिखा है:-

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने (एतेराज़ किया और) कहा कि आप ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! और इस तरह गिरया करें। हज़रत ने फ़रमायाः ''ऐ इब्ने औफ़! ये रिक़्क़ते क़ल्ब की अलामत है। फिर दोबारा गिरया फ़रमाया और कहा कि बिला शुबह आँखें रो रही हैं और दिल ग़मगीन है।

इस से मालूम हुआ कि बावजूद सहाबी के टोकने के हज़रत रसूल[स०] ने गिरया फ़रमाया और अपने अमल से ज़ाहिर किया कि गिरया किसी तरह ख़िलाफ़े शरअ नहीं है।

तीसरा मौक़ा

मिशकात में सही मुस्लिम से मनक़ूल है।

अबूहुरैरा से रिवायत है कि हज़रत रसूल[स०] ने अपनी माँ की क़ब्र की ज़ियारत की और ख़ुद भी रोए और अपने गिर्द के लोगों को भी रुलाया।

अगरचे साबिक़ की हदीस से किसी मुसीबत के वाक़े होने पर गिरया का जवाज़ साबित हो चुका था। लेकिन ये हदीस इस बात को बतलाती है कि किसी पुरानी मुसीबत को याद करके रोना भी जाएज़ है बल्कि दूसरों को रुलाना भी जाएज़ है इस से मजलिसे अज़ा के जाएज़ होने पर बहुत कुछ रौशनी पड़ती है।

चौथा मौक़ा

ज़ैद बिन हारसा और जाफ़रे तैयार और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की ख़बर सुनकर हज़रत[स०] ने गिरया फ़रमाया। इसको इमाम बुख़ारी ने किताबुल जनाएज़ के पेज-3 पर अपनी सही में नक़्ल कया है और इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब' में ज़ैद बिन हारसा के हालात में लिखा है कि:-

हज़रत रसूल[स०] ने जाफ़र और ज़ैद पर गिरया किया और फ़रमाया हाए मेरे भाई और मेरे मोनिसे तनहाई और मुझ से बाते करने वाले।

पाँचवां मौक़ा

हज़रत की किसी साहबज़ादी[1] का इन्तेक़ाल हो गया था हज़रत क़ब्र पर बैठे *'व-ऐनाहु तदमआन'* इस हाल में कि हज़रत की आँखों से आँसू बह रहे थे।

(सही बुख़ारी, जिल्द-1 पेज-146)

छटा मौक़ा

सही बुख़ारी जिल्द-1 पेज-146 और सही मुस्लिम, बाबुल बुका अलल मैय्यित में मज़कूर है कि हज़रत की किसी साहबज़ादी के बच्चे का इन्तेक़ाल हो गया था तो हज़रत की आँखों से आँसू जारी हो गए।

(1) रसूल[स०] की किसी साहबज़ादी का हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के अलावा होना मुसल्लम नहीं है मुमकिन रिब्बिया पर बिन्त का इतलाक़ हुआ हो।

साद बिन अबी वक़ास ने एतेराज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! ये क्या? फ़रमाया: ये रिक़्क़ते क़ल्ब है जिसको ख़ुदा ने अपने बन्दों के दिल में पैदा कर दिया है। ख़ुदा उन ही बन्दों पर रहम करता है जिनके दिल में रहम हो। इस हदीस से साबित होता है कि गिरया फ़ितरी अम्र है।

सातवाँ मौक़ा

सही बुख़ारी व सही मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है: साद बिन अबी वक़ास बीमार हुए और हज़रत रसूल[स०] अस्हाब की एक जमाअत के साथ अयादत के लिए गए। साद को बेहोश पाया तो हज़रत रोने लगे जिसकी वजह से तमाम मजमे पर गिरया तारी हो गया।

क्या इसके बाद गिरया व ज़ारी के जवाब में शक करना रसूल[स०] के अफ़आल और शरई अहकाम का मुक़ाबला नहीं है।

तक़रीरे रसूल[स०]

जिस तरह ख़ुद रिसालतमआब[स०] के फ़ेल से रोने का जवाज़ साबित है, उसी तरह दूसरों को किसी मुसीबत पर रोते हुए देखकर रसूल[स०] का मना न करना बल्कि मना करने वाले को रोकना भी मनक़ूल है। देखो जामिउल उसूल में है:-

अहलेबैते रसूल[स०] में कोई मौत हो गई तो तमाम औरतें जमा होकर गिरया व ज़ारी करने लगीं। हज़रत उमर ने खड़े होकर सबको मना किया और रोकना शुरु किया जिस पर हज़रत रसूल[स०] ने फ़रमाया: "छोड़ दो इनको ऐ उमर क्योंकि आँखें रोती ही हैं और दिल दुख्ता ही है और अभी तो ज़मान-ए-मुसीबत कुछ दूर भी नहीं हुआ है।"

इस से मालूम हुआ कि हज़रत उमर रोने वालों को जब मना कर रहे थे तो रिसालतमआब[स०] को बुरा लगा और आपने मना किया। अगर गिरया किसी हैसियत से नाजाएज़ होता तो कभी हज़रत रसूल[स०] इसको पसन्द न फ़रमाते, कम से कम ख़ुद नहीं रोका था तो दूसरे के रोकने पर सुकूत फ़रमाते मगर इसके ख़िलाफ़ आपने मना करने से रोका जो जवाज़ की खुली दलील है।

दूसरा मौक़ा

इमाम अहमद बिन हंबल ने रुक़ैय्या रसूल[स०] की बेटी की वफ़ात पर औरतों के रोने के मुताल्लिक़ इब्ने अब्बास से जो रिवायत नक़्ल की है उसमें है:-

हज़रत उमर अपने कोड़े से औरतों को मारने लगे। हज़रत ने फ़रमाया कि छोड़ दो उनको कि रोती रहें। फिर फरमाया कि दिल और आँख से जहाँ तक ताल्लुक़ है, वह ख़ुदा की तरफ़ से है और रिक़्क़ते क़ल्ब की अलामत है और हज़रत शफ़ीर क़ब्र पर बैठ गए, हज़रत फ़ातिमा[स०] आपके पहलू में रो रही थीं तो हज़रत बमुक़तज़ाए शफ़क़त अपने कपड़े से उनकी आँखें पोछते थे।

तीसरा मौक़ा

मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल में अबूहुरैरा से रिवायत है:-

जनाब रिसालतमआब[स०] के सामने से एक जनाज़ा गुज़रा जिसके साथ औरतें रो रही थीं। हज़रत उमर ने उनको मना किया तो रसूल[स०] ने फ़रमाया छोड़ दो इनको क्योंकि दिल को रंज पहुँचता ही है और आँखों से आँसू बहना फ़ितरी है।

चौथा मौक़ा

अल्लामा इब्ने अब्दुल बर कुर्तुबी मालिकी ने इस्तीआब में अबुर्रबीअ़ अब्दुल्लाह बिन साबित अन्सारी के हाल में लिखा है कि:-

हज़रत रिसालतमआब[स०] ने उनको अपनी क़मीस का कफ़न दिया और जुबैर बिन ऐनक सहाबी ने जब औरतों को रोने से मना किया तो हज़रत ने फ़रमाया कि छोड़ दो इनको ऐ अबू अब्दुर्रहमान, जब तक अबुर्रबीअ़ का जनाज़ा उनके दरमियान है, ये रोती रहें।"

इस रिवायत को अलफ़ाज़ के इख़्तेलाफ़ के साथ इब्ने असीर जज़री ने उसदुल ग़ाबा में भी नक़्ल किया है।

पाँचवां मौक़ा

इस्तीआब में इब्ने अब्दुल बर पेज-380 जिल्द

अव्वल में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से रिवायत है किः-

''उहद के दिन जब मेरे बुज़ुर्ग बाप की लाश लाई गई और मेरी फूफी रोती हुई आईं तो मैं भी रोने लगा। लोग मुझे मना करने लगे। मगर रसूल^स०^ ने मुझको मना नहीं किया और फ़रमाया कि तुम लोग रोओ या न रोओ ख़ुदा की क़सम फ़रिश्ते अपने परों का साया किये रहे यहाँ तक कि तुम ने लाश को दफ़्न किया।''

इस रिवायत को अल्लामा इब्ने असीर जज़री ने भी अपनी किताब 'उस्दुल ग़ाबा' (जिल्द-3) में थोड़े फ़र्क़ के साथ नक़्ल किया है।

इन रिवायतों से साफ़ ज़ाहिर है कि गिरया व बुका से मना करना बिल्कुल हज़रत रसूल^स०^ की मुख़ालेफ़त है। बज़ाहिर हैरत होती है कि सहाबा को कौन सी ज़िद थी कि बावजूद रसूल^स०^ की मुतावातिर तम्बीह के वह गिरया व बुका से मना करते रहते थे और रसूल की बार-बार मुमानेअत पर तवज्जो न करते थे लेकिन इसकी हक़ीक़त इतिहास की किताबों को देखने से वाज़ेह हो जाती है। हक़ीक़त में गिरया व बुका से मुमानेअत एक जाहिलियत की रस्म थी जो अक्सर अफ़राद में तबीअते सानिया के तौर पर राएज हो गई थी। अहले जाहिलियत का अक़ीदा था कि गिरया व बुका की वजह से जोशे इन्तेक़ाम ख़त्म हो जाता है और बुज़दिली पैदा होती है। इसकी वजह से वह लोग सख़्ती से अपनी औरतों को रोने से बाज़ रखा करते थे और इसका मक़ामे फ़ख़्र में ज़िक्र किया करते थे। अरब का शायर अपने माया नाज़ महासिन का ज़िक्र करते हुए कहता हैः-

''ख़ुदा की पनाह इस बात से कि हमारी औरतें नौहा करें किसी मरने वाले के ऊपर, या हम क़त्ल से चीख़ उठें।''

इस आदत का फ़लसफ़ा अगरचे मज़कूरा बाला उसूल पर मबनी था, लेकिन धीरे-धीरे रोने से नफ़रत आदत बन गई और वह संगदिली और बेरहमी का पेशख़ेमा क़रार पाई। सहाबा का रोने से मना करना हक़ीक़त में तबीअत में इस आदत के पैदा होने का असर था, जिसकी वजह से रसूल^स०^ का एक मरतबा बल्कि चन्द मरतबा का इरशाद भी उनकी तबीअत को न बदल सका और आख़िर उम्र तक उनमें ये आदत बाक़ी रही।

क़ौले रसूल^स०^

वाक़िआत तो यहाँ बतलाते हैं कि ख़ुद रसूल^स०^ ने गिरया व ज़ारी पर आमादा किया है और सहाबा को तरग़ीब दी है। चुनानचे 'मतालिबुल मोमिनीन' और 'तफ़सीरे कबीर' में मुहम्मद बिन अबी जाफ़र से नक़्ल हैः-

मुहम्म्द बिन अबी जाफ़र कहते हैं कि हमारे पास एक शख़्स अन्सार में से आया। उसने मिनजुमला और बातों के एक बात ये बयान की कि रिसालतमआब का गुज़र बनी असद की तरफ़ से हुआ। उस वक़्त वह अपने मक़तूलीने जंगे उहद पर रो रहे थे। हज़रत ने फ़रमायाः अफ़सोस हमज़ा पर कोई रोने वाला नहीं है। औरतें कहती हैं कि हम अपने घरों से निकल कर ख़ान-ए-रसूल^स०^ में आए और हम ने हमज़ा पर गिरया व ज़ारी की। उस वक़्त रिसालतमआब^स०^ घर में मौजूद थे और हम उनकी तस्बीह की आवाज़ सुन रहे थे। आपने हमारे पास पैग़ाम भेजा कि तुम्हारा बड़ा एहसान है।

सरख़सी ने कहा है कि हज़रत ने ये अफ़सोस इसलिए किया था कि हमज़ा उस दिन सैय्यिदुश्शोहदा थे मगर आलमे मुसाफ़िरत में इन्तेक़ाल हुआ था तो रिसालतमआब^स०^ ने मरसिया पढ़वाया और किताब 'मग़ाज़ी' में है कि साद बिन मआज़ और साद बिन उबादा और मआज़ बिन जबल ने ये सुना तो अपने घराने की औरतों को ख़ान-ए-हज़रत^स०^ में लाए और उन्होंने हमज़ा पर नौहा किया और उस दिन से मदीने में ये रस्म जारी हो गई कि जब कोई मरता था तो पहले हमज़ा पर गिरया व बुका कर लेते थे।

इस रिवायत को इमाम अहमद बिन हंबल ने अपने मुस्नद में इन अलफ़ाज़ में नक़्ल किया हैः-

हज़रत रसूल^स०^ उहद से लौटे तो अन्सार की औरतें अपने शहीद अज़ीज़ों पर रोने लगीं। हज़रत ने फ़रमाया कि अफ़सोस हमज़ा पर रोने वाली औरतें मौजूद नहीं, हज़रत^स०^ सो गए, आँख खुली तो सहाबा की औरतें

हमज़ा पर रो रही थीं, रावी कहता है कि अब तक यह रस्म है कि जब सहाबा की औरतें रोती हैं तो पहले हमज़ा पर गिरया करती हैं।''

इस रिवायत को तबरी और इब्ने असीर ने अपनी तारीख़ में और इब्ने अब्द रब्बिह कुर्तुबी ने 'अक़्दे फ़रीद' में और इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब' में भी ज़िक्र किया है जिसके बाद इसके सही होने में कोई शक नहीं हो सकता।

ग़ौर के क़ाबिल ये बात है कि हमज़ा ने मुसाफ़िरत में इन्तेक़ाल किया था और कोई रोने वाला न था तो हज़रत रसूल[स°] ने अन्सार की औरतों से गिरया व बुका और नौहा कराया और ये रस्म जारी हो गई कि किसी अज़ीज़ की मौत में सबसे पहले हमज़ा पर गिरया किया जाता था तो फिर किसी मज़लूम के आलमे मुसाफ़िरत में शहीद होने और उनके अइज़्ज़ा के न रो सकने पर अगर हम गिरया व ज़ारी करें तो कौन सा एतेराज़ की कौन सी वजह है? फिर जबकि हक़ीक़त ये है कि हमज़ा की मज़लूमियत सैय्यिदुश्शोहदा[अ°] की मज़लूमियत के सामने कोई हक़ीक़त नहीं रखती, शहीदे कर्बला पर मुसीबतों का ख़ात्मा हो गया था और यक़ीनन रसूल[स°] के दिल में हुसैन[अ°] की जितनी मुहब्बत थी वह भी हमज़ा से ज़्यादा है। फिर हज़रत इमाम हुसैन[अ°] पर गिरया कहाँ तक खुदा व रसूल[स°] की नज़र में ममदूह व मुस्तहसन न होगा।

दूसरी रिवायत

इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब फी अस्माइल अस्हाब' में जाफ़र बिन अबी तालिब के तज़किरे में लिखा है:-

जब हज़रत रसूल[स°] को जाफ़र की शहादत की ख़बर पहुँची तो हज़रत उनकी बीवी असमा बिन्ते उमैस के यहाँ तशरीफ़ ले गए और उनको जाफ़र का पुरसा दिया। इसी दरमियान फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा रोती हुई आईं और कह रही थीं: हाए मेरे चचा, रसूल[स°] ने फ़रमाया जाफ़र ऐसे शख़्स पर रोने वालियों को रोना चाहिए।

एक तो फ़ातिमा ज़हरा[स°] का फेल खुद हुज्जत और वाजिबुल इत्तेबा है क्योंकि ये मुअज़्ज़मा बइत्तेफ़ाके उलमाए अहलेसुन्नत आय-ए-ततहीर में दाख़िल और बक़ौल अकाबिर उलमा-ए-अहलेसुन्नत मरियम और आसिया से अफ़ज़ल थीं, इस के साथ रसूल[स°] का इस फेल से मना न करना जवाज़ की खुली निशानी है। अगर सिर्फ़ इतना ही होता तो मतलब साबित था। मगर रिसालतमआब[स°] ने अपने क़ौल से शक की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रखी। (जाफ़र ऐसे मरतबे वाले शख़्स पर रोने वालों को रोना चाहिए) इस से मालूम होता है कि मरने वाला अगर बारगाहे अहदियत में मिस्ल जाफ़र के तक़र्रुब रखने वाला और मरातिबे फ़ज़ीलत में फ़ाएज़ हो तो उस पर रोना मुस्तहसन है। इस्लामी कुतुबे हदीस व तारीख़ से पूछो कि जाफ़र के फ़ज़ाएल को हुसैन बिन अली[अ°] के फ़ज़ाएल से कौन सी मुनासिबत है और अगर मज़लूमियत को मेयार मान लो तो कर्बला के मैदान का जंगे मौता के मारके से मुक़ाबला कर लो, ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ नज़र आएगा।

अल्लाह का शुक्र है क़ौले रसूल, फेले रसूल, तक़रीरे रसूल, हर तरह से गिरया व बुका का जवाज़ बल्कि मुस्तहब होना साबित हो गया। मज़मून अपने हुदूद से गुज़र चुका है और मौक़ा नहीं कि क़लम को गर्दिश दी जाए।

सहाबा और ताबईन के अफ़आल और अक़्वाल से गिरया व बुका के सुबूत के लिए एक मुस्तक़िल मज़मून चाहिए। इस तरह ख़ास कर हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा सलामुल्लाहि अलैह पर जिस तरह रसूल[स°] ने गिरया व बुका की तारीफ़ फ़रमायी है और खुद वाक़िए से क़ब्ल इस मुसीबत का असर लिया है ये एक जुदागाना मौजू है। फिर सहाबा और ताबईन, तबे ताबईन और अकाबिरे अहले इस्लाम ने शहादते सैय्यिदुश्शोहदा पर जिन ख़यालात और तास्सुरात का इज़हार किया है उसके लिए एक मुस्तक़िल किताब की ज़रूरत है। अगर मौक़ा हुआ तो इन मतालिब पर भी रौशनी डाली जाएगी।

